

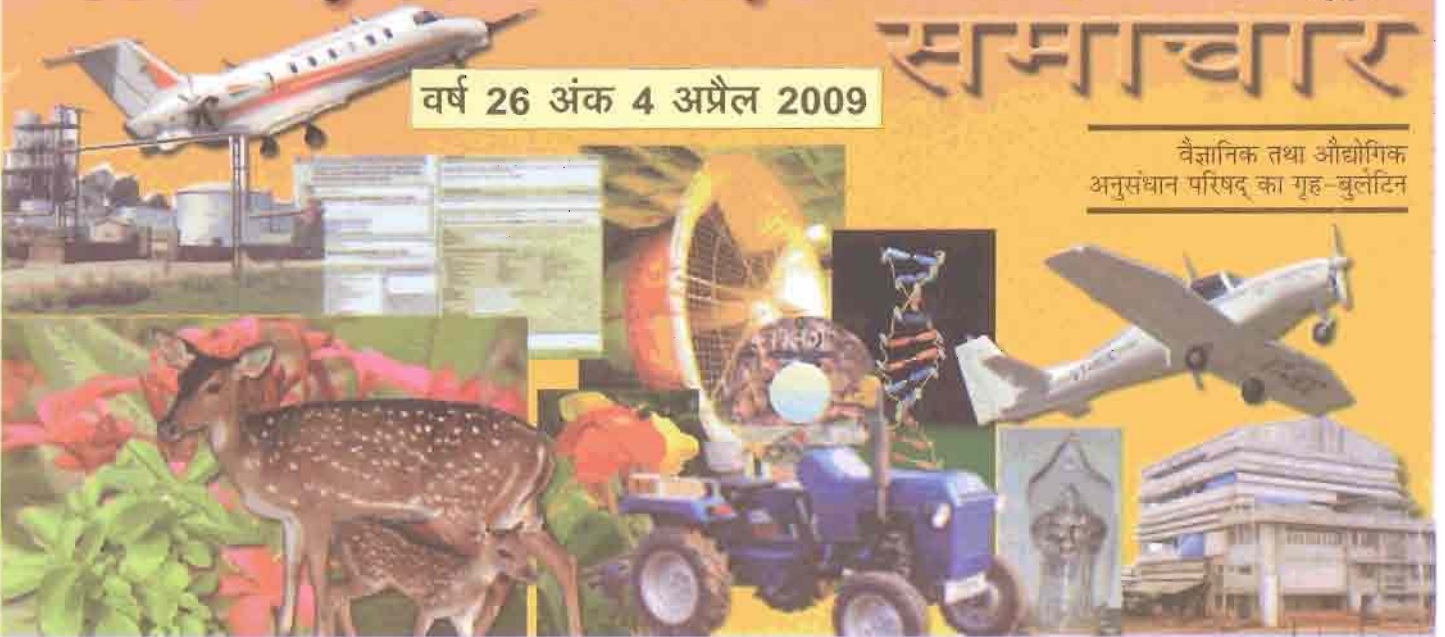
सी एस आई आर



समाचार

वर्ष 26 अंक 4 अप्रैल 2009

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक
अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलंदिन



सीएसआईआर ने चैक गणराज्य के साथ वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक भागीदारी के व्यवहार्य कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किये

सीएसआईआर ने एएससीआर (एकेडमी ऑफ साइंसेस ऑफ दी चैक रिपब्लिक) की विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सहयोग पर संधि की अनुवर्ती कार्यवाही के रूप में चैक एकेडमी ऑफ साइंसेस, जिसका नेतृत्व उसके अध्यक्ष प्रो. वैक्लेव पेसेस कर रहे थे, के एक उच्चस्तरीय दल ने वर्ष 2009-2011 के लिए एस एण्ड टी भागीदारी के सीएसआईआर-एएससीआर कार्यकारी कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने के लिए भारत का दौरा किया। प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर तथा प्रो. वैक्लेव पेसेस ने सीएसआईआर में दिनांक 9 फरवरी 2009 को इस कार्यकारी कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किये।

दोनों पक्षों ने नेटवर्किंग के लिए एडवांस मैटिरियल्स के क्षेत्र में, जिसमें नैनो प्रौद्योगिकी, खनन अनुसंधान यथा रॉक मैकेनिक्स तथा प्लास्टिक व्यर्थ उपयोगिता, जैवसंवेदक तथा न्यूरोपैथोजेनेसिस सम्मिलित हैं, की दस संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं का चयन किया। प्रो. पेसेस ने हस्ताक्षर समारोह के पश्चात फ्रॉम दी पीज ऑफ ग्रेगर मेण्डल टू दी ह्यूमन जीनोम एण्ड बियोण्ड विषय पर एक लोक व्याख्यान भी दिया। समारोह में उपस्थित विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र के व्यक्तियों ने व्याख्यान में भाग लिया।



प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर तथा प्रो. वैक्लेव पेसेस, अध्यक्ष, एएससीआर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी भागीदारी के सीएसआईआर-एएससीआर कार्यकारी कार्यक्रम पर हस्ताक्षर करते हुए

अन्तरराष्ट्रीय पोलर वर्ष (आईपीवाई) विकास तथा पारिस्थितिकी के मध्य सन्तुलन बनाएं

- श्री सोमनाथ चटर्जी माननीय अध्यक्ष, लोकसभा

लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने उस मार्ग को अपनाने का आह्वान किया, जो संवेदनशील पारिस्थितिकी सन्तुलन में बाधा डाले बिना विकास को बढ़ावा देता हो। वे राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली द्वारा 4 फरवरी 2009 को अन्तरराष्ट्रीय पोलर वर्ष को लक्षित कर आयोजित किये गये एक समारोह में बोल रहे थे। 60 राष्ट्रों के हजारों से अधिक वैज्ञानिकों की प्रतिभागिता के साथ अन्तरराष्ट्रीय पोलर वर्ष पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों पर केन्द्रित वैज्ञानिक अनुसंधान का एक अन्तरराष्ट्रीय कार्यक्रम है।

अध्यक्ष महोदय ने निस्केयर के प्रकाशन जो इस अति महत्वपूर्ण विषय आगामी भविष्य में विश्व के पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों का कारक है, पर प्रकाशित इंडियन



श्री सोमनाथ चटर्जी की-नोट अभिभाषण देते हुए

जर्नल ऑफ मेरीन साइंसेज तथा साइंस रिपोर्टर के विशेषांकों का भी विमोचन किया। अपने की-नोट अभिभाषण में श्री सोमनाथ चटर्जी ने लोगों में इस बात की जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता को रेखांकित किया कि ध्रुवीय क्षेत्रों में दिखायी देने वाले परिवर्तन मात्र उन्हीं क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं। उनका विषम प्रभाव सम्पूर्ण पारिस्थितिकी

पर भी पड़ेगा और मानव जीवन तथा समाज पर तो अनिवार्य रूप से। हमें ध्रुवीय क्षेत्रों की इस संवेदनशीलता को समझने की तत्काल आवश्यकता है जिन्होंने ग्लोबल पर्यावरण पर विशेषकर मौसम तथा जलवायु पर गहरा प्रभाव डाला है। श्री सोमनाथ चटर्जी ने कहा कि उन्हें प्रसन्नता है कि सीएसआईआर तथा भूविज्ञान मंत्रालय अन्तरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों के साथ मिलकर विश्व समुदाय के लिए विशेष महत्व के इस मुद्दे पर परस्पर वैज्ञानिक

संलग्नता को बढ़ाने के लिए सहयोग कर रहे हैं। श्री कपिल सिब्बल को सन्दर्भित करते हुए स्पीकर महोदय ने कहा कि यह मंत्रालय तथा सीएसआईआर भाग्यशाली हैं, जिन्हें एक ऐसा मंत्री मिला है जिसने अंटार्कटिक तथा आर्कटिक दोनों स्थानों पर जाकर वास्तविक स्थिति का अनुभव किया है तथा इस कठिन क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों के साथ सीधा वार्तालाप



इंडियन जर्नल ऑफ मेरीन साइंसेज (बायें) तथा साइंस रिपोर्टर के विशेषांकों का विमोचन करते हुए

भी किया है। श्री सोमनाथ चटर्जी ने कहा कि ध्रुवीय क्षेत्र ग्लोबल वार्मिंग की प्रक्रिया के प्रति विशेष संवेदनशील हैं। जैसे कि ग्रीनहाउस गैसों की अधिकता के कारण हमारा ग्रह गर्म हो रहा है जिसके कारण ध्रुवीय क्षेत्रों की बर्फ तथा हिम पिघल जाती है तथा बहुत कम मात्रा में सौर विकिरण अन्तर्िक्ष में परावर्तित हो पाता है तथा अधिकतर भूमि की सतह तथा सागरों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। यह अतिरिक्त ऊर्जा ध्रुवीय क्षेत्रों को और अधिक गर्म बनाती है जिससे और अधिक बर्फ पिघलती है तथा और अधिक गर्मी उत्पन्न हो जाती है। यह दुष्प्रक्र समुद्री स्तर को बढ़ाने तथा भूमि के बहुत बड़े क्षेत्र में बाढ़ के कारण इसे रहने के अयोग्य बनाता है।

इससे पहले, अपने स्वागत सम्बोधन में श्री निखिलेश झा, पूर्व संयुक्त सचिव, सीएसआईआर ने ध्रुवीय अध्ययन में सीएसआईआर के सशक्त योगदान के विषय

में बताया। राष्ट्रीय समुद्री विज्ञान संस्थान (एनआईओ), गोवा, सीएसआईआर की एक संवैधानिक संस्थापना अंटार्कटिका में जाने वाले प्रथम भारतीय वैज्ञानिक अभियान के निष्पादन में आगे था। डॉ. एस.जेड. कासिम, भूतपूर्व निदेशक, एनआईओ इस प्रथम भारतीय अंटार्कटिक वैज्ञानिक अभियान के प्रमुख थे। अभियान का आरम्भ 6 दिसम्बर 1981 को किया गया तथा यह दल 21 फरवरी 1982 को गोवा से अंटार्कटिक पहुंचा। इस दल में 13 वैज्ञानिक थे तथा उनमें से आठ वैज्ञानिक सीएसआईआर की संवैधानिक संस्थापनाओं से थे।

अंटार्कटिक के तीसरे अभियान दल के नेता डॉ. एच.के. गुप्ता, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई), हैदराबाद थे। सीएसआईआर की संवैधानिक संस्थापनाओं यथा एनआईओ, एनपीएल तथा एनजीआरआई के नौ वैज्ञानिक अंटार्कटिक को जाने वाले अंटार्कटिक अभियानों

के दल के प्रमुख रह चुके हैं।

श्री झा ने इंगित किया कि सीएसआईआर प्रयोगशाला में कार्यरत वैज्ञानिकों के जनजीवन जैव विविधता, भूविज्ञान तथा भूभौतिकीय पहलू, पर्यावरण विज्ञान तथा अंटार्कटिक की समुद्री शैवाल के रासायनिक गुणों पर 120 से भी अधिक अनुसंधान पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

अंटार्कटिक में वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय द्वारा पहचानी गई नवीन प्रजातियों के 12.55 को केन्द्रीय कोशिकीय तथा आण्विक जीवविज्ञान केन्द्र (सीसीएमबी), सीएसआईआर के एक अन्य संस्थान द्वारा पहचाना गया है। सीएसआईआर का एक अन्य संस्थान राष्ट्रीय वानस्पतिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) द्वारा भी मेकलियोड आइलैण्ड, अंटार्कटिक में लाइकेन की 12 नवीन प्रजातियों को पहचाना गया है। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल) आर्कटिक तथा अंटार्कटिक दोनों स्थानों पर पूर्णतः परिचालित मल्टी इन्स्ट्रुमेंट



श्री सोमनाथ चटर्जी, श्री निखिलेश झा तथा श्री प्रदीप बनर्जी के साथ दिखाए दे रहे हैं - डॉ. रसिक रविन्द्र, निदेशक, नेशनल सेंटर फॉर अंटार्कटिक एण्ड ओशियन रिसर्च, गोवा; डॉ. एम.आर. रमेश कुमार, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय समुद्री विज्ञान संस्थान, गोवा; डॉ. एस.वी. रामाचन्द्रन राव, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद; तथा डॉ. ए. सेनगुप्ता, डॉ. ए.के. हन्जुरा, डॉ. एस.डी. शर्मा, डॉ. एस.एल. जैन, डॉ. एच.एन. दत्ता तथा डॉ. बी.सी. आर्या, सभी राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली के वैज्ञानिक। ये वे नौ वैज्ञानिक हैं, जो ध्रुवीय क्षेत्रों पर भारतीय अभियान के सदस्य/प्रमुख रहे हैं, इन्हें इस समारोह में स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

आयनोस्फेरिक रियलटाइप मॉनीटरिंग सुविधा की स्थापना की योजना बना रहा है। वह इस सुविधा को न्यूनतम 11 वर्षों के लिए परिचालित करना चाहता है। राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई) ने ग्लोबल रेफरेंस फ्रेम के प्रबन्धन तथा संशोधन में प्रमुख वैश्विक भूमिका प्राप्त की है। वास्तव में, सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में कार्यरत वैज्ञानिक अंटार्कटिक के सभी 28 भारतीय वैज्ञानिक अभियानों से सम्बन्धित रहे हैं। इस सन्दर्भ में सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये कार्यों से सम्बन्धित समेकित प्रलेख, **कन्द्रीयव्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू अंटार्कटिका रिसर्च** का प्रकाशन वर्ष 2006 में सीएसआईआर द्वारा किया गया। इस कम्पैडियम में एससीआई अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित 116 शोधपत्र समाहित हैं।

डॉ. रसिक रविन्द्र, निदेशक, नेशनल सेन्टर फॉर अंटार्कटिक एण्ड ओशियन रिसर्च, गोवा द्वारा प्रदत्त एक प्रेरक प्रस्तुतीकरण में ध्रुवीय क्षेत्रों में भारत के योगदान को ओर अधिक रेखांकित किया गया। उन्होंने कहा कि भारतीय अंटार्कटिक कार्यक्रम दिसम्बर 1981 में उस समय आरम्भ हुआ जब प्रथम भारतीय अभियान गोवा से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात वार्षिक अंटार्कटिक अभियान दल को समुद्री विकास विभाग/नेशनल सेन्टर फॉर अंटार्कटिक एण्ड ओशियन रिसर्च के तत्वाधान में भेजा जा रहा है। आजतक, 27 ऐसे अभियान पूर्ण किये जा चुके हैं जिसमें वेडेल सी तथा क्रिल एक्सप्लोरेशन के लिए दक्षिणी समुद्र अभियान भी सम्मिलित हैं। भारत के अंटार्कटिक में दो स्थायी स्टेशन तथा अंटार्कटिक में एक स्थायी स्टेशन है। एक और अन्य स्टेशन शीघ्र ही अंटार्कटिक में स्थापित होने वाला है। उन्होंने कहा कि भारत की निरन्तर अभिरुचि तथा ध्रुवीय विज्ञान में अपनी निदर्शक सक्षमताओं के साथ हमारे देश ने विभिन्न महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की हैं। 19 अगस्त 1983 को भारत ने अंटार्कटिक सन्धि पर हस्ताक्षर किये तथा जल्द ही उसने 12 सितम्बर 1983 में कन्सल्टेटिव स्टेटस प्राप्त कर लिया। भारत

ने 01 अक्टूबर 1984 को साइंटिफिक कमेटी ऑन अंटार्कटिक रिसर्च (सीसीएआर) में सदस्य के रूप में प्रवेश लिया तथा वर्ष 1986 में **कन्जरवेशन ऑफ अंटार्कटिक मेरीन लिविंग रिसोर्सेज (सीसीएएमएलआर)** का सदस्य बन गया। भारत ने वर्ष 1997 में अंटार्कटिक सन्धि के पर्यावरण प्रोटोकॉल को अनुसमर्थित किया तथा इस प्रकार अपने इस पुरातन महाद्वीप को सुरक्षित रखने की प्रतिबद्धता को समर्थन दिया। समारोह के दौरान, लोकसभा के माननीय स्पीकर श्री सोमनाथ चटर्जी ने एक परियोजना जिसका शीर्षक **डवलपमेंट ऑफ डेटाबेस फॉर क्लाइमेट इम्पैक्ट स्टडीज** का भी शुभारम्भ किया। इस परियोजना का प्रारम्भ निस्केयर द्वारा किया गया है तथा इसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एन्वायरनमेंट स्टडीज तथा स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है। प्रो. वी.के. जैन, डीन ऑफ स्टूडेंट्स, जेएनयू ने परियोजना के उद्देश्य की एक झलक प्रस्तुत की तथा कहा कि एशिया के विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील बढ़ते समुद्री स्तर के कारण न्यून उन्नयन के प्रमुख जनसंख्या केन्द्र यथा भारत में मुम्बई, चीन में शंघाई, इंडोनेशिया में जकार्ता, जापान में टोक्यो तथा बांग्लादेश में ढाका कुछ ऐसे ही क्षेत्र हैं।

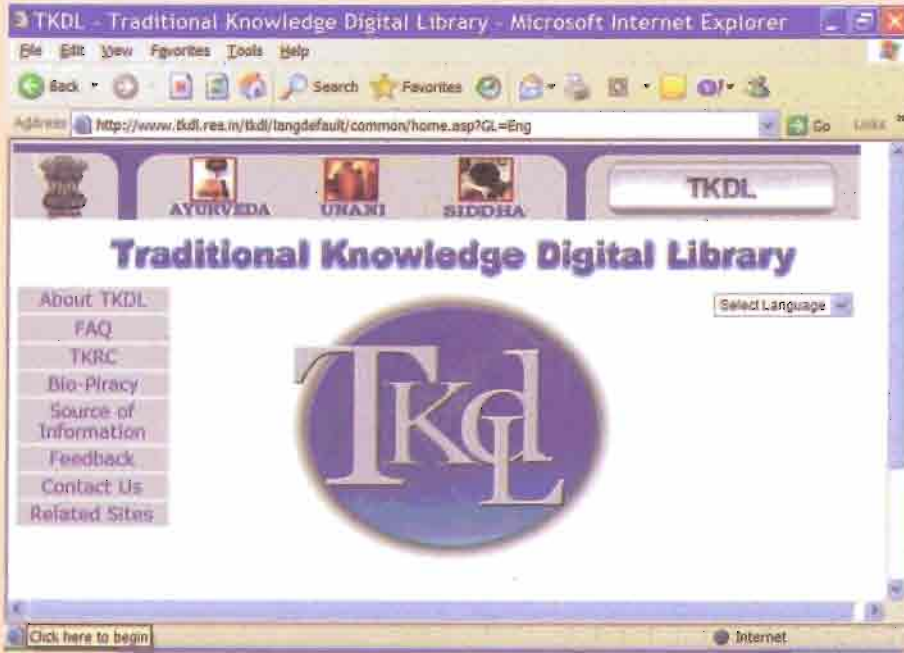
अतः परियोजना के मूल उद्देश्य लक्ष्यद्वीप महाद्वीप के वर्षा, तापमान वाष्पीकरण तथा भूजल मात्रा के अल्पकालिक तथा स्थानिक परिवर्तनों का प्रेक्षण तथा विश्लेषण करना, जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक संसाधनों तथा सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों में परिवर्तन से सम्बन्धित प्रेक्षित तथा प्रकाशित प्रलेखों पर आधारित वेब एनेबल्ड डेटाबेस का विकास करना, प्राकृतिक संसाधनों तथा सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को मूल्यांकित करने के लिए फ्रेमवर्क तथा डिसीजन सपोर्ट टूल का विकास करना तथा जलवायु परिवर्तन के कारण समुचित अनुकूलन तथा न्यूनीकरण के लिए क्षमता के विकास हेतु विधि का सूत्रीकरण करना है।

भारत ने पारम्परिक औषधि ज्ञान को जैव पायरेसी से बचाने के लिए यूरोप (ईयू) के साथ भागीदारी की

भारत ने यूरोपियन पेटेंट ऑफिस के साथ 7 फरवरी 2009 को निर्माण भवन, नई दिल्ली में किये एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर के द्वारा भारत के पारम्परिक औषधि ज्ञान को जैव पायरेसी से सुरक्षित रखने के लिए एक मैकेनिज्म की स्थापना की है। भारत का पारम्परिक ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय (टीकेडीएल) डेटाबेस की रचना का एकमात्र प्रयास अब पेटेंट निरीक्षकों को यूरोपियन पेटेंट ऑफिस में (ईपीओ-34 सदस्यी राज्य है) इंडियन औषधि पद्धति पर आधारित पेटेंट आवेदनों के केस में प्रायर आर्ट स्थापित करने के लिए उपलब्ध होगा।

ऐसी प्रथम सहमति देश की प्रचुर पारम्परिक औषधीय सम्पदा जिसमें वृहद आर्थिक क्षमता है, के अतिलंघन के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करेगी। ऐसा अतिलंघन जिसे पिछले दशक के दौरान देखा गया - यूनाइटेड स्टेट्स पेटेंट ट्रेड मार्क कार्यालय (यूएसपीटीओ) द्वारा हल्दी के घाव भरने के गुण को गलत पेटेंट प्रदान करना (1995) तथा यूरोपियन पेटेंट ऑफिस (ईपीओ) द्वारा नीम के कवकरोधी गुणों का पेटेंट।

अमेरिका तथा यूरोप में इन पेटेंटों का प्रदत्तीकरण राष्ट्रीय व्यथा का कारण बन गया क्योंकि प्रत्येक भारतीय ने यह अनुभव किया कि भारत के ज्ञान को गलत ढंग से भारत से छीन लिया गया।



इसके अतिरिक्त इन पेटेण्टों से पेटेण्टों के आवेदनकर्ताओं को पेटेण्ट दिये जाने वाले देश में प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने का विशिष्ट अधिकार प्राप्त हो जाता।

इस प्रथम प्रयास की उत्पत्ति वर्ष 2000 में आरम्भ हुई जब आयुष तथा सीएसआईआर द्वारा विशेषज्ञों की एक टॉस्क फोर्स का गठन भारत के पारम्परिक ज्ञान की सुरक्षा के मैकेनिज्म की योजना बनाने के लिए किया गया। टीकेडीएल के विशेषज्ञ समूह ने अनुमान लगाया कि भारतीय औषध प्रणाली से सम्बन्धित लगभग 2000 पेटेण्टों को गलत ढंग से अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पेटेण्ट प्रदान किया गया है, मुख्यतः इस कारण से कि भारत का पारम्परिक औषधि ज्ञान संस्कृत, हिन्दी, अरबी, उर्दू, तमिल जैसी भाषाओं में विद्यमान है तथा भाषा तथा आरूप की बाधा के कारण अन्तरराष्ट्रीय पेटेण्ट ऑफिस के पेटेण्ट निरीक्षकों द्वारा न तो उपागम्य है तथा न ही समझा गया।

टीकेडीएल ने इन बाधाओं को तोड़ा है तथा हिन्दी, संस्कृत, अरबी,

फारसी, उर्दू तथा तमिल जैसी भाषाओं में उपलब्ध सूचना को वैज्ञानिक ढंग से परिवर्तित तथा सुव्यवस्थित कर सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों तथा एक नवीन वर्गीकरण प्रणाली ट्रेडिशनल नॉलेज रिसोर्स क्लासीफिकेशन (टीकेआरसी) के सहयोग से पांच अन्तरराष्ट्रीय भाषाओं यथा अंग्रेजी, जापानी, फ्रांसीसी, जर्मन तथा स्पेनिश में 30 मिलियन ए-4 साइज के पेपरो में सूचना सामग्री के साथ ओपन डोमेन टेक्स्ट बुक्स में उपलब्ध कराने में सफल रहा है।

आज, टीकेडीएल के द्वारा भारत लगभग 2 लाख (0.2 मिलियन) औषध सूत्रों जो कि नीम तथा हल्दी के ही समरूप हैं, को सुरक्षित करने में सक्षम है। औसतन अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदत्त पेटेण्टों का विरोध करने में पांच से सात वर्ष लगते हैं तथा इस पर अनुमानतः एक से तीन करोड़ (0.2-0.6 मिलियन यूएस डॉलर) का खर्च आता है। अतः दो लाख औषधीय सूत्रों को टीकेडीएल की अनुपस्थिति में सुरक्षित रखने का व्यय आश्चर्यजनक

तथा पूर्णतः पहुंच से परे है। यह अन्तरराष्ट्रीय सहमति अद्वितीय है तथा इसके वैश्विक बौद्धिक सम्पदा प्रणाली तथा पारम्परिक ज्ञान की सुरक्षा में दीर्घावधि प्रभाव होंगे जो कि इस तथ्य से सुस्पष्ट है कि पहले ईपीओ में 285 से अधिक औषधीय पौधों के प्रयोग पर प्रदत्त पेटेण्ट ईपीओ में निरीक्षकों के लिए प्रलेखित ज्ञान के पब्लिक डोमेन में सुलभता प्राप्त न होने के कारण दिये गये। इसके अतिरिक्त किसी भी समय भारतीय पारम्परिक ज्ञान पर आधारित 40-50 पेटेण्ट आवेदन पत्र पेटेण्ट की प्राप्ति की प्रतीक्षा में हैं तथा टीकेडीएल एक्सेस एग्रीमेंट भविष्य के उन सभी पेटेण्टों के प्रदत्तीकरण का निरोध करेगा जो टीकेडीएल में पूर्ण ज्ञान के विद्यमान होने से सुस्पष्ट है।

ईपीओ के साथ टीकेडीएल एक्सेस एग्रीमेंट अन्तरराष्ट्रीय फोरम में भारत तथा विकासशील देशों की समझौता शक्ति में वृद्धि करेगा। वास्तव में, अन्तरराष्ट्रीय आईपी समुदाय ने टीकेडीएल को पारम्परिक ज्ञान के रक्षात्मक बचाव के एक प्रभावशाली उपकरण के रूप में मान्यता दे दी है। अभी हाल ही के वार्तालाप में विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन के महानिदेशक ने टीकेडीएल को एक सशक्त व्यावहारिक उपकरण माना है जिसमें अन्य देशों के लिए जो अपने पारम्परिक ज्ञान को सुरक्षित रखना चाहते हैं, को एक मॉडल प्रदान कर पेटेण्ट प्रणाली के अन्तरराष्ट्रीय नीति सन्दर्भों में अतुलनीय योगदान दिया है। ईपीओ के साथ टीकेडीएल एक्सेस एग्रीमेंट आसान रूप में इस वृहद आर्थिक सक्षमता की विस्तृत सूचना के दुर्विनियोजन/दुरुपयोग को रोकने के लिए अन्य प्रमुख अन्तरराष्ट्रीय पेटेण्ट ऑफिसों से समरूप समझौतों के लिए पथप्रदर्शक बनेगा।

एनईआईएसटी में संस्थागत नीतिशास्त्र समिति (आईईसी) की बैठक का आयोजन

उत्तर पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एनईआईएसटी), जोरहाट द्वारा स्थापित संस्थागत नीतिगत समिति (आईईसी) की बैठक 19 नवम्बर 2008 को आयोजित की गयी।

इस समिति के अध्यक्ष डॉ. मृदुल हजारिका, निदेशक, टीआरए-जोरहाट तथा दस सदस्य नामतः - डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, एनईआईएसटी, जोरहाट, सदस्य (सामान्य); प्रो. एस.आर. चौधरी, भूतपूर्व प्रमुख, औषध विज्ञान विभाग, एएमसी-डिब्रूगढ़; सदस्य (चिकित्सा वैज्ञानिक/फार्माकोलॉजी); डॉ. पी.के. बरुआ, चिकित्सा अधिकारी एनईआईएसटी, सदस्य (रोग-विशेषज्ञ); डॉ. आदिनाथ सरमा, ताराजन, जोरहाट, सदस्य (रोग-विशेषज्ञ); श्री एम.सी. खूंड, एडवोकेट, जोरहाट कोर्ट, सदस्य (कानून विशेषज्ञ); प्रो. अनन्ता कुमार बरुआ, सेवानिवृत्त, उपप्रधानाचार्य, बहोना कॉलेज, जोरहाट, सदस्य (सामाजिक वैज्ञानिक); डॉ. पी.सी. बोरा, प्रधानाचार्य, सीकेबी कॉमर्स कॉलेज, जोरहाट, सदस्य; डॉ. (श्रीमती) अनुजा बरुआ, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, थर्ड असम पुलिस बटालियन, जोरहाट, सदस्य (एपीडेमियोलॉजी); डॉ. बी.जी. उन्नी, वैज्ञानिक एफ, एनईआईएसटी, सदस्य (सचिव) तथा डॉ. एच. के. हजारिका, प्रधानाचार्य, डीसीबी कॉलेज, जोरहाट, सदस्य (फिलोसोफी) हैं।

डॉ. पी. जी. राव, निदेशक, एनईआईएसटी ने अपने स्वागत सम्बोधन

में कहा कि विशेष रूप से अनुसंधान परियोजना इनवॉयरनमेंटल कन्टेमिनेंट्स: न्यू स्क्रीनिंग टेक्नोलॉजी एण्ड इफैक्ट ऑन ह्युमन हेल्थ की समीक्षा करने के लिये समिति बनाई गयी थी जिसमें मानव स्वास्थ्य पर प्रदूषित पर्यावरण के प्रभाव का मूल्यांकन करना था।

इस अध्ययन में विशेष रूप से उस आबादी पर, जो ऑयल रिफाइनरियों, पेपर व पल्प फैक्ट्रियों, कोयला खदानों, ऑयल फील्ड तथा ऑयल ड्रीलिंग स्थलों के आस-पास में रह रही हैं, को सम्मिलित किया गया है।

डॉ. हजारिका, अध्यक्ष ने कहा कि नीतिशास्त्र और सामाजिक गतिविधि पर उसके प्रभाव के विभिन्न आयामों का उल्लेख करना आवश्यक है। उन्होंने यह भी सूचित किया की लगातार चल रही कुछ परियोजनाओं को समीक्षा करने के लिये अन्य अनुसंधान संस्थानों को भी आमंत्रित किया जाएगा।

डॉ. उन्नी ने परियोजनाओं के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। परियोजनाओं के विभिन्न पहलुओं जैसे कि कार्य योजना, आधारीक संरचना, निरीक्षण, सैम्पलिंग तथा जन्तुओं पर प्रयोगों पर पूर्ण रूप से विचार-विमर्श किया गया तथा समिति के सदस्यों द्वारा महत्वपूर्ण ढंग से समीक्षा की गयी। सदस्यों ने अध्ययन की सराहना की तथा सर्वसम्मति से विचार व्यक्त किया कि अध्ययन समाज के लिए लाभदायक होगा।

केन्द्रीय वाणिज्य तथा ऊर्जा मंत्री श्री जयराम रमेश ने एनईआईएसटी का दौरा किया

श्री जयराम रमेश, तत्कालीन वाणिज्य तथा उद्योग एवं ऊर्जा राज्य मंत्री, भारत सरकार ने पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (एनईआईएसटी), जोरहाट का 9 दिसम्बर 2008 को दौरा किया। उन्होंने भूविज्ञान (जियोसाइंसेज) विभाग में विशेष अभिरुचि प्रदर्शित की तथा विभाग की वर्तमान अनुसंधान गतिविधियों पर वैज्ञानिकों से चर्चा की। डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, एनईआईएसटी तथा डॉ. हर्ष गुप्ता, अध्यक्ष, एनईआईएसटी अनुसंधान परिषद, जो इस अवसर पर उपस्थित थे, ने भी हिमालयी पट्टी में भविष्य के सम्भावित प्रमुख भूकम्पों पर अपने विचार व्यक्त किये।

श्री रमेश ऑनलाइन/रियलटाइम सिस्मिक मॉनीटरिंग के लिए स्थापित सेन्ट्रल रिकार्डिंग ऑब्जरवेटरी की एक झलक देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उन्होंने जोर दिया कि एनईआईएसटी को पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण पर अधिक ध्यान देने के साथ और अधिक विस्तृत स्तर पर तैयार होना चाहिए, क्योंकि केन्द्रीय मंत्रालय ने अरुणाचल हिमालय में बहुत सी जल विद्युत ऊर्जा परियोजनाओं को स्वीकृति दे दी है। उन्होंने प्राथमिक स्तर पर पूर्वोत्तर भारत में सिस्मिसिटी पर एक बड़ी परियोजना के लिए सम्पूर्ण वित्तीय सहायता देने का भी आश्वासन दिया।

प्राइड ऑफ इंडिया एक्सपो में सीएसआईआर पैवेलियन ने पुरस्कार जीता (96वीं इंडियन साइंस कांग्रेस)

शिलांग में 3 से 7 जनवरी के दौरान आयोजित 26वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में प्राइड ऑफ इंडिया एक्सपो प्रदर्शनी में लगाये गये सीएसआईआर के पैवेलियन को **सर्वाधिक पथप्रदर्शक (Most Innovative)** होने के लिए पुरस्कृत किया गया।

सीएसआईआर 800 थीम के अन्तर्गत पैवेलियन में प्रदर्शित **सीएसआईआर**

की पहल विशेष रूप से 800 मिलियन लोगों के हित के लिए, जो जीवन-स्तर के पिरामिड की सबसे निचली पंक्ति में हैं, पर लक्षित था। सीएसआईआर 800 थीम महात्मा गांधी जी की अपेक्षाओं का पालन करने में सक्षम है। जिस प्रकार से प्रयोगशाला में कुछ प्रयोग पूरे 24 घंटों में पूरे होते हैं, वैसे ही आपके हृदय का बड़ा कोना कमजोर गरीब दस लाख लोगों के हित के लिए निरन्तर संवेदनशील बना हुआ हो।

सीएसआईआर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप के प्रयोग से सभी के लिए पेयजल, कम लागत के आवास, सस्ती दवाईयां, नैदानिक तथा जैव चिकित्सा उपकरण, व्यर्थ पदार्थों से सम्पदा, पोषणक्षम ऊर्जा, आईसीटी के व्यापक प्रयोग द्वारा सशक्तीकरण, कृषि



प्रो. प्रमोद टंडन, उपकुलपति, एनईएचयू, शिलांग तथा अध्यक्ष संयोजक समिति 96वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में सीएसआईआर की विज्ञान प्रसार एकक के मो. आसिफ अख्तर को सीएसआईआर पैवेलियन के लिये (मोस्ट इनोवेटिव) पुरस्कार देते हुए

उत्पादों में वृद्धि, उद्यमवृत्ति विकास इत्यादि की विकास करना चाहता है।

सीमैप, सीमेरी, सीएसआईओ, सीएसएमसीआरआई, आईएमएमटी, नीरी, एनईआईएसटी तथा निस्केयर से आये प्रतिनिधियों ने भी इस समारोह में भाग लिया।

प्राइड ऑफ इंडिया एक्सपो में सीएसआईओ

96वीं इंडियन साइंस कांग्रेस दिनांक 3-7 जनवरी 2009 नॉर्थ-ईस्ट हिल्स यूनिवर्सिटी शिलांग में आयोजित की गई। इसके अन्तर्गत एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य राष्ट्र की प्रौद्योगिकीय क्षमता और प्रगति को उत्तर-पूर्व क्षेत्र के लोगों के समक्ष प्रदर्शित करना था। सीएसआईआर ने सीएसआईआर-800 थीम के साथ इस प्रदर्शनी में भाग लिया।

सीएसआईआर मण्डप पर श्री अमोल पी. बोंडेकर और श्री बबन कुमार ने सीएसआईओ का प्रतिनिधित्व किया। इस मण्डप को अन्य लोगों के साथ-साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल शिब्ल, मेघालय के मुख्यमंत्री डॉ. डोनकूपर रॉय, महानिदेशक, सीएसआईआर प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, हरित क्रान्ति के जनक के नाम से प्रख्यात डॉ. स्वामीनाथन, नीति निर्माताओं, विभिन्न विश्वविद्यालयों के उप-कुलपतियों, संकाय सदस्यों और प्रशासनिक सेवा अधिकारियों ने देखा। इन वरिष्ठ आगंतुकों ने सामाजिक प्रयोग हेतु और जनता के सशक्तीकरण के लिए प्रौद्योगिकी के विकास में संगठन के प्रयासों की प्रशंसा की। उत्तर-पूर्व के विभिन्न वर्गों के लोगों ने विशेष रूप से संगठन द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों यथा मायोइलेक्ट्रिक आर्म, दृष्टिहीनता के लिए सुवाह्य रीडिंग मशीन और नमी कम्प्यूटर में रूचि दिखाई। चिकित्सा, कृषि एवं सामाजिक वर्ग के सदस्यों ने भी संगठन द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों में गहरी रूचि दिखाई।

सीकरी, कारैकुड़ी में फैराडे व्याख्यान

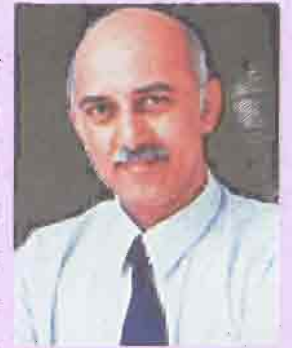
केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुड़ी में फैराडे स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रो. एम.एम. शर्मा, प्रतिष्ठित प्रोफेसर तथा मुम्बई विश्वविद्यालय के रसायन प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई के पूर्व निदेशक ने इस अवसर पर विद्युतरसायन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कुछ पहलू विषय पर विशेष व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिकों के लिए बैटरी के क्षेत्र में अनुसंधान के व्यापक अवसर हैं। उन्होंने विद्युतरसायन के अनुसंधानकर्ताओं से ऊर्जा उत्पादन पर ध्यान देने की अपील की। उन्होंने वैज्ञानिकों को कहा फ्यूल सेल तथा पुनः आवेशित (रिचार्ज) की जा सकने वाली लीथियम पोलीमर बैटरियों के क्षेत्र में अपार सम्भावनाएं हैं, इसलिए इस क्षेत्र में वृहद अनुसंधान किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि बैटरियों का उपयोग विशेषतः मोबाइल फोन आदि से कई गुना बढ़ गया है तथा बैटरियों की मांग वैश्विक स्तर पर और अधिक द्रुत गति से बढ़ने की सम्भावना है।

उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि भारतीय वैज्ञानिक इस क्षेत्र में अपनी एक विशेष पहचान बनाएंगे। विद्युतरसायन प्रौद्योगिकी तथा अभियांत्रिकी के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि रासायनिक प्रतिक्रिया अभियांत्रिकी के क्षेत्र में भी कार्य प्रारम्भ हुआ है परन्तु इसमें अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। प्रो. शर्मा ने कहा कि बहुत सारे उद्योग हाइड्रोजन उत्पादन से जुड़े हुए थे। यहां तक कि 2200 डिग्री सेंटीग्रेड पर भी जल को पृथक करना आसान नहीं था। उन्होंने बताया कि दूसरी ओर थर्मोडायनामिक सिद्धान्त के प्रयोग से तथा सही विद्युतरसायनिक गतिविधियों के प्रयोग से हाइड्रोजन की प्राप्ति के लिए जल को पृथक किया जा सकता है।

इस व्याख्यान समारोह के प्रारम्भ में प्रो. ए.के. शुक्ला, निदेशक, सीईसीआरआई तथा प्रबन्ध सचिव, माइकल फैराडे मैमोरियल प्राइवेट ट्रस्ट ने सभी उपस्थितों का स्वागत किया। प्रो. एम.एस. अनन्त, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै तथा अध्यक्ष, अनुसंधान समिति, सीईसीआरआई ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा डॉ. टी. न. कुमार, वैज्ञानिक, सीईसीआरआई एवं सचिव, माइकल फैराडे मैमोरियल प्राइवेट ट्रस्ट ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

डॉ. वी. प्रकाश आईएफओएसटी के मानद अध्यक्ष मनोनीत किये गये

हाल ही में, डॉ. वी. प्रकाश, निदेशक, केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान (सीएफटीआरआई), मैसूर को आईयूएफओएसटी के इंटरनेशनल एकेडेमी ऑफ फूड साइंसेस एण्ड टेक्नोलॉग (आईएफओएसटी) के मानद अध्यक्ष के रूप में मनोनीत



किया गया है। डॉ. रॉल्फ ब्लैक्फील्ड ने शंघाई, चीन में 19-23 अक्टूबर 2008 के दौरान आयोजित 14वीं कांग्रेस ऑफ आईयूएफओएसटी में उन्हें अध्यक्ष के रूप में सम्मान प्रदान किया। डॉ. प्रकाश, आईएफओएसटी के अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किये जाने वाले प्रथम भारतीय हैं तथा भारत के आईएफओएसटी के प्रथम फेलो भी हैं।

आईएफओएसटी चुनिन्दा विशिष्ट खाद्य वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों का एक समूह है जो खाद्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक विशेषज्ञता का सामूहिक संघ है। यह संघ आईयूएफओएसटी को मानवता के लिए विश्वव्यापी खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को सुदृढ़ बनाने में सहायता देने के लिये सदैव तत्पर रहता है। आईएफओएसटी बहुत बड़े स्तर में विभिन्न देशों में फैला हुआ है तथा दो वर्षों में एक बार इस संघ की बैठक होती है।

डॉ. प्रकाश की आईएफओएसटी को न केवल विश्व में विशेषज्ञता सुनिश्चित करने के लिए केन्द्रित एजेण्डा बनाने की योजना है बल्कि सम्पूर्ण विश्व में सीएफटीआरआई जैसे प्रमुख संस्थानों को नेटवर्किंग द्वारा कार्य निष्पादन के उच्चतम स्तरों तक ले जाने की योजना है।

निस्केयर में हर्बेरियम तकनीकों पर कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली में 20-25 अक्टूबर 2008 के दौरान हर्बेरियम तकनीकों पर छः दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य पौधों का संकलन, परिष्करण, पहचान, नामपद्धति से हर्बेरियम का डेटाबेस बनाने के लिए तकनीकों का, पौधों की जानकारी के दस्तावेज, हर्बेरियम की व्यवस्था इत्यादि पर प्रतिभागियों को वर्तमान जानकारी प्रदान करना तथा हर्बेरियम तकनीक से संबंधित नवीनतम विकास की उनमें जागरूकता जगाना।

यह कार्यशाला हर्बेरियम संग्रहाध्यक्षों, स्कूल/कॉलेज के जैवविज्ञान (बायोसाइंस) के शिक्षकों, विश्वविद्यालय के व्याख्याताओं, अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों, रिसर्च स्कॉलरों और विद्यार्थियों तथा उन लोगों के लिये, जो क्षेत्रीय हर्बेरियम को तैयार करने के इच्छुक थे, लक्षित थी। भारत, पाकिस्तान और नेपाल से आये 18 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।



मेव पर दिखाई दे रहे हैं (बायीं ओर से) डॉ. नरेन्द्र कुमार, प्रभारी, निस्केयर प्रशिक्षण कार्यक्रम; श्री एस.के. रस्तोगी, कार्यकारी निदेशक, निस्केयर तथा डॉ. एच.बी. सिंह, हर्बेरियम तकनीकों पर कार्यशाला समन्वयक

कार्यशाला को चार भागों में बांटा गया था - हर्बेरियम तकनीकों में पौधों के विभिन्न अंगों का परिष्करण तथा संकलन, पौधों के विभिन्न अंगों के संकलन के लिए प्रायोगिक अभ्यासों में पादपों के संग्रहण के लिये आस-पास के क्षेत्रों में भ्रमण करना; माइकोलॉजिकल नमूनाप्रदर्शों को तैयार करना तथा पादप आनुवंशिक स्रोतों

का परिष्करण करना; पौधों की पहचान करना, नामपद्धति तथा हर्बेरियम डेटाबेस बनाने की तकनीकों और अनुसंधान, शिक्षा तथा जैवविविधता के संरक्षण में हर्बेरियम की भूमिका आदि सम्मिलित था।

डॉ. बी. सुब्रामण्यम, वैज्ञानिक, निस्केयर ने हर्बेरियम एण्ड इट्स फंक्शन्स विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने बताया



फील्ड ट्रिप के दौरान प्रतिभागी पौधों का संकलन करते हुये



नमूनाप्रदर्शों (स्पेसिमेन) को तैयार करने के लिए प्रयोगात्मक अभ्यास करते हुये प्रतिभागी.

कि वर्गीकरण की मान्यता प्राप्त प्रणाली में पौधों की सही वानस्पतिक पहचान तथा नामपद्धति, घरेलू पादप नमूनाप्रदर्शों को स्थापित करने के लिए हर्बेरियम एक वैज्ञानिक टूल है। जैवविविधता को समझने के लिए हर्बेरियम संकलन मूल आधार के रूप में कार्य करता है। सिस्टिमैटिक बॉटनी तथा संबंधित क्षेत्रों के अध्ययन के लिए आधार स्रोत के रूप में हर्बेरियम संदर्भ केन्द्र, प्रलेखीकरण सुविधा तथा डेटा भंडार गृह के रूप में कार्य करता है।

डॉ. एच.बी. सिंह ने पौधों के प्रतिरूपों के संकलन के दौरान तथा नये हर्बेरियम तैयार करने के लिए आवश्यक पौधों के अंगों तथा उपकरणों के बारे में परिचर्चा की।

डॉ. सिंह ने पौधों की प्रक्रियाओं में शामिल विविध चरणों तथा तकनीकों का भी निदर्शन कराया जैसे कि पौधों को दबाना, सुखाना, विषाक्त करना, माऊण्टिंग, सिलना, लेबल लगाना, छंटाई करना, उपागम करना, सूचीकरण करना तथा ऐकों में हर्बेरियम शीटों को लगाना। उन्होंने हर्बेरियम के प्रतिरूपों को खराब होने के कारक, भौतिक और जैविक कारकों के बारे में बताया तथा पौधों के नमूनाप्रदर्श

को खेतों तथा हर्बेरियम में परिरक्षण करने के विभिन्न तरीकों पर भी प्रकाश डाला।

प्रतिभागियों को नमूनाप्रदर्शों के तैयार करने के लिए प्रयोगात्मक अभ्यास करने के लिए दिया गया जैसे कि माऊण्टिंग, सिलना और लेबल लगाना। डॉ. डी.के. अग्रवाल, भूतपूर्व प्रमुख, कवक विज्ञान (माइकोलॉजी) हर्बेरियम ने प्रतिभागियों को कवकों के संकलन और परिरक्षण तथा रोगी पौधों के नमूनाप्रदर्शों, संवर्धों के रखरखाव की आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी दी। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली में स्थित हर्बेरियम क्रिप्टोगैमी इंडियेड ओरिएण्टेलिस को दिखाने का भी प्रबंध किया गया था।

डॉ. ई.आर. नायर, प्रमुख, अन्वेषण विभाग, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर), ने कृष्य पौधों के वन्य जर्मप्लाज्म तथा उनकी वन्य जातियों के परिरक्षण में हर्बेरियम के महत्व की संक्षिप्त जानकारी दी तथा फसलों की जाति के आनुवंशिक विकास में वन्य जाति की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। एनबीपीजीआर के नेशनल हर्बेरियम ऑफ कल्टिवेटेड प्लांट्स (एनएचसीपी),

नेशनल जीन बैंक और नेशनल क्रायोजन बैंक के निरीक्षण करने से प्रतिभागियों को देश के आनुवंशिक स्रोतों की देखभाल और परिरक्षण करने की वर्तमान तकनीकों को समझने में आसानी हुई।

डॉ. एम.पी. शर्मा वनस्पति विज्ञान के प्रोफेसर, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने पौधों की नामपद्धति पर विस्तृत विचार व्यक्त किये। उन्होंने इंटरनेशनल कोड ऑफ बॉटेनिकल नोमेनक्लेचर (आईसीबीएन), जिसके द्वारा वर्गी (टैक्सा) का नाम निर्धारित किया जाता है; के नियम-विनियम को स्पष्ट किया।

श्री एस.के. बुर्डे, वैज्ञानिक, निस्केयर ने प्रतिभागियों को हर्बेरियम डेटाबेस बनाने के तरीकों से अवगत कराया। उन्होंने हर्बेरियम डेटाबेस बनाने के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयरों पर भी प्रकाश डाला।

डॉ. बी. सुब्रामणियम ने अपने व्याख्यान में पौधों की पहचान पर विस्तार से पौधों की पहचान करने के तरीकों का वर्णन किया तथा पौधों की पहचान में आइडेंटिफिकेशन कीज (कुंजियों) की भूमिका बतायी। उन्होंने पौधों के वर्धों (वेजीटेटिव) गुणों का उपयोग कर संबंधित

ऑनलाइन डेटाबेस का निदर्शन कराया। उन्होंने पौधों की पहचान के लिये एक प्रयोगात्मक क्रिया भी संचालित की।

डॉ. पी.एल. उनियाल, रीडर, वनस्पति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने जैवविविधता के संरक्षण और पर्यावरण के बचाव में हर्बेरियम की भूमिका पर व्याख्यान दिया। उनका मानना था कि हर्बेरियम ज्ञान स्रोत का केन्द्र है, जिसका आनुवंशिक स्रोतों के उद्भव के मूल केन्द्र को निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने लेबल डेटा संरक्षण जैवविज्ञान, पर्यावरणीय प्रभाव विवरण, संकटापन्न जातियां इत्यादि पर अंकित क्षेत्रों की सूची से पुनःसंकलन के द्वारा हॉटस्पॉट के स्थान, स्थानिकता, दुर्लभ अथवा संभवतः विलुप्त जातियों को बचाने के कार्य में हर्बेरियम के महत्व को विस्तार से बताया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया की डीएनए एक्सट्रैक्शन और फिंगरप्रिंटिंग तकनीकें समय (काल) और स्थान में विकासीय परिवर्तन पता लगाने में उपयोगी हैं।

डॉ. आर.डी. गौड़, भूतपूर्व प्रमुख, वनस्पति विज्ञान विभाग तथा डीन, विज्ञान संकाय, एच.एन. बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल ने ईथनोबॉटनी के अध्ययन में हर्बेरियम की भूमिका का वर्णन किया। उन्होंने सुस्पष्ट किया कि ईथनोबॉटनी के अध्ययन के लिए हर्बेरियम लेबल पर लिखे हुये पासपोर्ट डेटा की छानबीन का एक जाना माना तरीका है।

नई दिल्ली रिज के बुद्धा जयन्ती पार्क के आसपास के क्षेत्र में पौधों के नमूनाप्रदर्शों के संकलन के लिए एक फील्ड ट्रिप आयोजित किया गया था। बाॅटेनिकल गार्डन ऑफ इंडियन रिपब्लिक (बीजीआईआर), नोएडा में भी निरीक्षण का आयोजन किया गया था। मैनेजमेंट ऑफ हर्बेरिया पर आयोजित कार्यशाला के समन्वयक डॉ. एच.बी. सिंह द्वारा दिये गये व्याख्यान के साथ तकनीकी सत्र समाप्त हुआ। निस्केयर के सॉ मैटिरियल हर्बेरियम एण्ड म्युजियम (आरएचएमडी) द्वारा तैयार की गयी सीडी भी प्रतिभागियों को दिखाई गयी।

प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिपुष्टि में बताया कि कार्यशाला अधिक सूचनात्मक, योजनाबद्ध और विषय सामग्री में भरपूर थी। श्री एस.के. रस्तोगी, कार्यकारी निदेशक, निस्केयर ने प्रतिभागियों को हर्बेरियम तकनीकों पर प्रमाणपत्र तथा सीडी प्रदान की। उन्होंने एक पुस्तक फील्ड मैनुअल ऑन हर्बेरियम टैकनीक्स का भी विमोचन किया।

डॉ. एच.बी. सिंह द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई।

डॉ. रणधीर मुखोपाध्याय डॉ. जे. कोग्गिन ब्राउन मेमोरियल गोल्ड मैडल से सम्मानित

डॉ. रणधीर मुखोपाध्याय, राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआईओ), गोआ के भूविज्ञान समुद्र विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक को माइनिंग, जियोलॉजिकल एण्ड मेटैलर्जिकल ऑफ इंडिया (एमजीएमआई), कोलकाता के द्वारा वर्ष 2007-2008 के जियोलॉजिकल साइंसेस में डॉ. जे. कोग्गिन ब्राउन मेमोरियल गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें 27 सितम्बर 2008 को एमजीएमआई 102वीं वार्षिक आमसभा में प्रदान किया गया।



डॉ. मुखोपाध्याय को स्थलाकृति (टोपोग्राफी) तथा ध्वानिकी पारदर्शी तल की तलौछ सतह के संदर्भ में स्थानिक उपसहसंधक में मैंगनीज नोड्यूल कैमिस्ट्री तथा रूपात्मक (मॉर्फोलॉजिकल) परिवर्तन में 25 वर्षों से अधिक का अनुसंधान अनुभव है — इन रिज इंडियाज मिड ओशन रिज के अनुसंधान की पहल करने में वे पहले व्यक्ति थे।

डॉ. मुखोपाध्याय ने एम.एस. कृष्णन स्वर्ण पदक तथा सी.वी. रामन फेलोशिप के साथ-साथ अनेक सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त किये हैं। दो वर्षों की अवधि के लिए उन्होंने दि मॉरीशियस, ओशियनोग्राफी इंस्टीट्यूट, मॉरीशियस के निदेशक के रूप में कार्य किया है। राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात अनेक अनुसंधान पत्रिकाओं में उनके 36 अनुसंधान प्रपत्र प्रकाशित हुये हैं।

सीएलआरआई के वैज्ञानिक पुरस्कार के लिये चयनित

सीएलआरआई, चेन्नै के वैज्ञानिक डॉ. जे. राघव राव को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के इन्दिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार के लिये तथा डॉ. (सुश्री) ए. गनानमनी को जैवप्रौद्योगिकी विभाग के टाटा इनोवेशन फेलोशिप अवाड के लिए चयनित किया गया है।

सीकरी, कारैकुड़ी में सीएसआईआर का विज्ञान में युवा नेतृत्व सीपीवाईएलएस कार्यक्रम

सीकरी, कारैकुड़ी में दिनांक 22-24 दिसम्बर, 2008 विज्ञान में युवा नेतृत्व सम्बन्धी सीएसआईआर के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिला स्तर पर मार्च/अप्रैल 2008 में 10वीं की परीक्षा में वरीयता प्राप्त करने वाले तथा वर्तमान में 11वीं कक्षा की पढ़ाई कर रहे 26 छात्रों ने अपने माता-पिता/अभिभावकों/अध्यापकों के साथ भाग लिया। प्रो. ए.के. शुक्ला, निदेशक, सीकरी ने दिनांक 22 दिसम्बर 2008 को सुबह 9.30 बजे आयोजित उद्घाटन भाषण में बताया कि कैसे विज्ञान मुख्यतः मौलिक विज्ञान ने प्रौद्योगिकी विकास तथा तद्अनुवर्ती राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में योगदान दिया है। उन्होंने युवाओं को विज्ञान के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

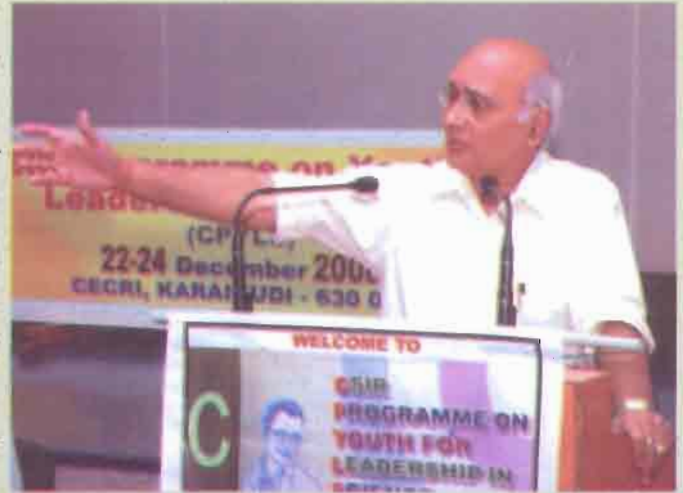
इससे पूर्व डॉ. वी. यज्ञरामन, अध्यक्ष, सीपीवाईएलएस ने प्रतिभागियों को स्वागत किया तथा सीकरी की गतिविधियों



सीपीवाईएलएस कार्यक्रम में भाग लेने आये विद्यार्थी

तथा सीपीवाईएलएस के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों को शिक्षा में उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन के प्रोत्साहन स्वरूप विज्ञान पुस्तकों तथा सामग्री की एक-एक शैक्षणिक किट प्रदान की गई। दिनांक 22 तथा 23 दिसम्बर को पूर्वाह्न के सत्र: प्रसिद्ध विज्ञान व्याख्यान

जैसे कि विज्ञान का विकास, वैज्ञानिक जागरूकता, नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर तथा इंटरनेट, गणितीय विज्ञान का प्रचलन, रसायन विज्ञान में संभावनाएं तथा आधुनिक जैव-प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रयोग आयोजित किये गये। इन दोनों दिनों में अपराह्न में गैल्वेनिक सेल के सिद्धान्तों, भौतिक प्रकाशिकी तथा विद्युत-चुम्बकीय प्रभाव, ल्युमिनेसेन्स आभास तथा पदार्थ, जलीय विद्युतअपघटन द्वारा हाइड्रोजन उत्पादन, इलेक्ट्रोफॉरमिंग, संक्षारण दर मापन आदि सम्बन्धी प्रदर्शन/प्रयोग आयोजित किए गए। दिनांक 22 दिसम्बर को अपराह्न प्रयोगात्मक सत्र से पूर्व नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत तथा सौर



प्रो. ए.के. शुक्ला, निदेशक, सीकरी उद्घाटन भाषण देते हुये

शक्ति पर एक फिल्म दिखायी गयी। विज्ञान में गुणवत्ता पूर्ण नेतृत्व तथा प्राणी जगत के चमत्कार विषयों पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। दिनांक 23 दिसम्बर को प्रयोगात्मक सत्र के उपरान्त एक विज्ञान प्रश्नोत्तरी तथा विज्ञान/चमत्कार की सच्चाई विषय पर एक व्याख्यान-सह-प्रदर्शन का आयोजन भी किया गया।

दिनांक 24 को सुबह प्रतिभागियों को कानडकाथन स्थित परम्परागत वेट्टिनाड महल दिखाने के लिए ले जाया गया। अपराह्न में आयोजित छात्रों की वैज्ञानिकों से मुलाकात कार्यक्रम में छात्रों ने काफी सक्रियता से भाग लिया तथा सीकरी के वैज्ञानिकों से चर्चाकर अपनी विज्ञान सम्बन्धी शंकाओं का समाधान किया।

दिनांक 24 को अपराह्न, डॉ. टी. रामसामी, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। उन्होंने



प्रो. टी. रामसामी विशेष व्याख्यान देते हुये

अपने विशेष व्याख्यान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा भारत सरकार द्वारा युवाओं को विज्ञान के क्षेत्र की ओर आकर्षित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

उन्होंने सर सी. वी. रामन तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा स्वतन्त्रता पूर्व तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद अपनाए गए विभिन्न वैज्ञानिक पथ का भी उल्लेख किया। सर सी वी रामन ने प्रकृति के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान को अपनाया। यह अनुसंधान बिना किसी बड़ी सरकारी मदद के तथा विज्ञान के अनुप्रयोग पर कोई विशिष्ट जोर दिए बिना था। दूसरी ओर पंडित नेहरू का यह मानना था कि भारत में गरीबी को हटाना तथा राष्ट्र की आर्थिक प्रगति, केवल विज्ञान द्वारा ही सम्भव है। इस उद्देश्य से पूरे देश में राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों की स्थापना की गई। सामाजिक विकास में विज्ञान के योगदान का एक महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय उदाहरण है - हरित क्रान्ति।

उन्होंने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में माता-पिता का ध्यान पैसे पर केन्द्रित है तथा वे शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न क्षेत्रों का मूल्यांकन मुख्यतः उनके माध्यम से प्राप्त

होने वाली नौकरी के आधार पर ही करते हैं। इसलिए प्रतिस्पर्धा तथा आर्थिक विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग मुख्य हो जाते हैं। आजकल के बच्चों को बेहद तनावपूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करना पड़ता है। संभवतः ये परीक्षाएं छात्रों द्वारा

प्रश्नों के उत्तर देने में लिए गए समय का मूल्यांकन अधिक करती हैं न कि उनकी वैज्ञानिक अन्वेषण में अभिरुचि तथा विश्लेषण क्षमता का।

उन्होंने सूचित किया कि भारत सरकार अब **इन्सपायर (अनुप्रमाणित अनुसंधान के लिए वैज्ञानिक खोज)** नामक एक कार्यक्रम प्रारम्भ कर रही है ताकि युवा प्रतिभाएं अत्यधिक प्रतिस्पर्धा तथा छंटनी की प्रक्रियाओं से गुजरे बिना विज्ञान के क्षेत्र में अपना कौशल दिखा सकें। आज देश भर में लगभग 1.7 करोड़ विद्यार्थी बोर्ड की परीक्षा दे रहे हैं। इनमें से वरीयता प्राप्त 1 प्रतिशत विद्यार्थियों की संख्या लगभग 1.7 लाख होगी। इन्हें बोर्ड परीक्षा में उनकी श्रेणी व वरीयता क्रम के आधार पर ही चुना जाएगा। इन सभी विद्यार्थियों को विज्ञान के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने के लिए एक श्रेष्ठ छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। विज्ञान शिक्षा प्रसार का एक उद्देश्य शोधपरक गतिविधियां एवं परियोजना आधारित शिक्षण भी होगा। इन्सपायर कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य विज्ञान शिक्षण के लिए प्रत्येक वर्ष में 1 करोड़ छात्रवृत्ति प्रदान करना है।

उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आज भारत में युवाओं के लिए बहुत अच्छे

अवसर उपलब्ध हैं। हमारा देश एक ऐसा युवा देश है, जिसकी औसतन आयु 29.8 वर्ष है। पूरे विश्व में प्रत्येक वर्ष स्नातक उपाधि प्राप्त करने वाले 1.8 करोड़ इंजीनियरों में से लगभग एक तिहाई भारतीय हैं। हमारी अनुसंधान परियोजनाएं अन्य वैश्विक परियोजनाओं की तुलना में किफायती हैं। चन्द्रयान परियोजना अपने प्रथम प्रयास में ही न केवल सफल अपितु काफी किफायती भी रही है। एचआईवी-एड्स के लिए बनाई जाने वाली भारतीय औषधियां बहुत ही किफायती हैं।

16वीं सदी के प्रारम्भ में वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत और चीन का भाग 43 प्रतिशत था। वह दिन दूर नहीं जब भारत पुनः एक सशक्त आर्थिक ताकत बनकर वैश्विक पटल पर उभरेगा और इसके लिए हमें अभिनव विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाली युवा पीढ़ी तैयार करनी होगी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा भारत सरकार इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

अन्तिम सत्र में एक प्रतिपुष्टि (फीडबैक) सत्र भी रखा गया जिसमें छात्रों तथा अध्यापकों/अभिभावकों ने इस कार्यक्रम की उपयोगिता एवं महत्व के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी छात्रों एवं उनके अभिभावकों ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए आयोजकों का धन्यवाद किया।

समापन समारोह में डॉ. वी यज्ञरामन, अध्यक्ष सीपीवाईएलएस ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए तथा उनके मत एवं प्रश्नों का समाधान किया। अन्त में श्री आर. राजशेखर, संयोजक, सीपीवाईएलएस द्वारा कार्यक्रम के संक्षिप्त विवरण एवं धन्यवाद प्रस्ताव देने के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

एनजीआरआई के डॉ. आर.के. चड्डा को आईजीयू का डैसीनियल अवार्ड 2008

प्रदान किया गया

डॉ. आर.के. चड्डा, वैज्ञानिक-एफ, राष्ट्रीय भूभौतिक अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई), हैदराबाद को 5 नवम्बर 2008 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में आईजीयू के 45वें सम्मेलन में भारतीय भूभौतिक संघ (आईजीयू) का डैसीनियल पुरस्कार 2008 प्रदान किया गया।



डॉ. चड्डा को यह पुरस्कार ब्रॉड बैंड सीमोलॉजी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिये दिया गया। उनकी पहल इंडियन शील्ड सीस्मिसिटि तथा संरचना को समझने के लिए इंडियन प्लेट के नीचे लिथोस्फियेरिक-एस्थेनोस्फियेरिक बाउन्ड्री (एलएबी) के निरोधक नये परीक्षण करने में है। इनके परिणामस्वरूप, क्रिटेशियस काल के दौरान, भारतीय टेक्टोनिक प्लेट की तुलना में ऑस्ट्रेलियाई और अफ्रीकी प्लेट के तीव्र अपवाह की भूमंडलीय भूगतिकी समस्या के लिए विश्वासोत्पादक स्पष्टीकरण प्रदान किये गये हैं।

इन परिणामों को सन 2007 में नेचर पत्रिका में प्रकाशित किया गया। उनके अन्य मुख्य योगदान सुनामी की बढ़ती हुई ऊंचाइयों का प्रथम अनुमान लगाना है, जो उन्होंने दिसम्बर 2004 सुनामी के तुरन्त पश्चात बताया था। यह परिणाम अंडमान और निकोबार द्वीप और सुन्दा खाई के साथ-साथ विभिन्न भूकम्प स्रोतों के लिए भारतीय तटीय क्षेत्रों में बाढ़ के लिए हजारों दृश्य लेखों को विकसित करने के लिए पथप्रदर्शक है।

डॉ. चड्डा ने पहले भी वर्ष 2003 में भू-भौतिकी में राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार प्राप्त किया तथा वर्ष 2008 में वे एकेडेमी ऑफ साइंसेज, आन्ध्रप्रदेश के फेलो चुने गये तथा वर्ष 2007 में भारतीय भूभौतिकी संघ के फेलो चुने गये। वर्तमान में वे विभिन्न प्रतिष्ठित अन्तरराष्ट्रीय पदों पर कार्यरत हैं, उदाहरणार्थ वे इंटरनेशनल नैचुरल हैर्जाड सोसायटी के अध्यक्ष हैं। हाल ही में वे पुनः चार वर्षों (2008-2012) के लिए एशियन सीस्मोलॉजिकल कमीशन के महासचिव चुने गये हैं। ये चुनाव जापान में एशियन सीस्मोलॉजिकल कमीशन की सातवीं जनरल असेंबली तथा दि सीस्मोलॉजिकल सोसायटी ऑफ जापान में 25-27 नवम्बर 2008 के दौरान आयोजित किया गया था।

वर्तमान में डॉ. चड्डा एनजीआरआई में सीस्मोलॉजी ग्रुप के प्रमुख हैं। उनके अन्तरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय एससीआई वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिकाओं में 52 से अधिक अनुसंधान प्रपत्र प्रकाशित हुये हैं तथा वे चार व्यावसायिक वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिकाओं के अतिथि सम्पादक हैं।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की
सभी प्रयोगशालाओं के
नोडल अधिकारियों/
जनसम्पर्क अधिकारियों/
हिन्दी अधिकारियों/
अनुवादकों से अनुरोध है
कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित
गतिविधियों यथा वैज्ञानिक
अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/
सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों
आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना
सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन
के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में
हिन्दी भाषा में ही
संपादक, सीएसआईआर, समाचार
को भेजने की
कृपा करें।

संपादक,
सीएसआईआर समाचार
ईमेल: deeksha@niscair.res.in

निस्केयर

उपलब्ध कराता है आपकी आवश्यकता के अनुरूप ज्ञान आधारित सेवाएं

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), सीएसआइआर वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सूचना प्रबंधन प्रणाली तथा सेवाओं का नेतृत्व करने वाला प्रामाणिक संस्थान है

औषधीय एवं सर्गंध पादप सूचना सेवा - वैल्यू ऑफ इंडिया तथा मापा डेटाबेसों पर आधारित सेवा। अनुसंधानकर्ताओं, उद्यमियों, उद्योगपतियों, कृषकों तथा सरकारी एजेंसियों के लिए एक आदर्श सेवा।

पहचान सेवा - औषधीय महत्व के पादपों/अपरिष्कृत औषध सामग्री की पहचान के लिए।

कन्टेंट्स, एक्सट्रैक्ट्स एवं फोटोकॉपी सेवा - आवश्यकता आधारित।

साहित्य खोज सेवा - 6000 से अधिक अन्तरराष्ट्रीय डेटाबेसों पर सुलभता।

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुवाद सेवा - जापानी, जर्मनी, फ्रांसीसी, स्पेनी, चीनी तथा रूसी भाषा से अंग्रेजी में।

बिब्लियोमेट्रिक सेवाएं - विशिष्ट विषयों के लिए।

परामर्शक सेवाएं - अभिकल्पन, संपादन तथा प्रकाशन।

पुस्तकालय पुनर्गठन/स्वचलन/आधुनिकीकरण।

डेटाबेस अभिकल्पन तथा विकास।

उत्कृष्ट ग्राफिक आर्ट, प्रोडक्शन तथा मुद्रण सुविधाएं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- एसोसियेटशिप इन इन्फॉर्मेशन साइंस (एआइएस)
- अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम - सूचना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी/कम्प्यूटर अनुप्रयोग/तकनीकी लेखन/हर्बेरियम तकनीकें।

अधिक जानकारी लिए सम्पर्क करें -
निदेशक

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
निस्केयर

*डॉ. के.एस. कुण्डन् मार्ग, नई दिल्ली-110 012 एवं
सत्यसंग विहार मार्ग, नई दिल्ली-110 067

ई मेल: director@niscair.res.in

दूरभाष: *25846024, *25848385, 26517059

फैक्स: *25847062, 26862228



राष्ट्रीय अन्तर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्यजीत शुक्ला को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

राष्ट्रीय अन्तर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईआईएसटी-सीएसआईआर) के वैज्ञानिक डॉ. सत्यजीत शुक्ला को हाइड्रोजन सेंसर तथा सेपरेशन प्रेम्बेन के क्षेत्र में उनके द्वारा दिए गए उत्कृष्ट योगदान के लिए इंजीनियरी विज्ञान में वर्ष 2008 के युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



श्री कपिल सिब्बल, माननीय मंत्री, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी तथा भूविज्ञान एवं उपाध्यक्ष डॉ. ए. सत्यजीत शुक्ला को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार देते हुए

डॉ. सत्यजीत शुक्ला ने विख्यात अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में करीब 45 शोधपत्र प्रकाशित किए हैं। उनको एक अमेरिकी पेटेंट भी प्राप्त है। उनके दो और पेटेंट विचाराधीन हैं।

डॉ. शुक्ला ने वर्ष 1994 में पुणे विश्वविद्यालय से धातुकर्म विज्ञान में इंजीनियरी उपाधि प्राप्त की। फिर भारतीय

प्रौद्योगिकी संस्थान, पोवाई, मुम्बई से पदार्थ विज्ञान तथा इंजीनियरी में स्नातकोत्तर प्रौद्योगिकी (एम.टेक) तथा वर्ष 2002 में अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ सेंट्रल फ्लोरिडा, ओरलान्डो, यूएसए से पदार्थ विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उससे पूर्व, वर्ष 1998 में उन्होंने आईआईटी, मुम्बई से

एम.टेक.की उपाधि प्राप्त की थी। अमेरिका के सुप्रसिद्ध संगठन नासा में भी उनका वैज्ञानिक योगदान रहा है। वर्ष 2002-2006 के दौरान यूसीएफ में अपने पोस्ट डॉक्टरल अनुसंधान कार्य के दौरान उन्होंने नासा, यूएसए द्वारा प्रायोजित परियोजना में कार्य किए हैं। पिछले दो वर्षों से वे एनआईआई एसटी-तिरुवनन्तपुरम में प्रकाशिक उत्प्रेरण के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। सीएसआईआर के इस पुरस्कार में 50,000/-रुपए का नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र, फलक तथा अगले पांच वर्ष के लिए 25/- लाख रुपए का अनुसंधान अनुदान दिया जाता है।

डॉ. सुश्री स्वरुपा त्रिपाठी, डीईएफ पुरस्कार से सम्मानित

डॉ. सुश्री स्वरुपा त्रिपाठी, वैज्ञानिक-बी, मेटेरियल कंरेक्टराईजेशन डिवीजन, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली को 20 नवम्बर 2008 को उनके उत्कृष्ट योगदान तथा पार्शा चरणार्थ रासायनशास्त्र के क्षेत्र में उनके अनुसंधान को मान्यता देने के लिए एकेडेमी ऑफ एनवायरनमेंटल रायोलॉजी (एईवी) ने दावेला एजुकेशनल फाऊंडेशन (डीईएफ) पुरस्कार - युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2008 से सम्मानित किया है।



डॉ. एस.एन. मैती सीएमईआरआई के कार्यकारी निदेशक नियुक्त

डॉ. एस.एन. मैती, वैज्ञानिक-जी को 31 दिसम्बर 2008 से यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीमेसी), दुर्गापुर के कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।

अपने अनुसंधान और विकास के 23 वर्षों से अधिक के कार्यकाल में उनके 58 राष्ट्रीय /अन्तरराष्ट्रीय पेटेंट हैं तथा उन्हें चार विख्यात राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुये हैं।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादक: दीक्षा बिष्ट; अनुवाद: मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउट: मलखान सिंह; कम्पोजिंग: कृष्णा

फोन: 25848702, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/361 ग्राम: PUBLIFORM, New Delhi; फैक्स: 25847062

ई-मेल: deeksha@niscair.res.in वेबसाइट: http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें